School of Education

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति एवं शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन।" (Prathamik Shiksha mein Digital Shikshan ki Vartman Sthiti Evam Shikshakon ki Smasyaon ka Adhyayan) being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year-2022-23.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Surendra Kumar and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Kavita Tomar
(Signature)
Kavita Tomar
2200907

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)

(Signature)
Dr. Surendra kumar
Faculty of Education

(Signature) 03.06.2025
Prof. P.K.Astaling
(Director of Concerned School of Studies)

(Signature) 03/06/2025
(Name)
(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

Scanned with OKEN Scanner

प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति एवं शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन

(Prathamik Shiksha mein Digital Shikshan ki Vartman Sthiti Evam Shikshakon ki Smasyaon ka Adhyayan)

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN EDUCATION

To

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Kavita Tomar

Enrollment no. 2200907

Under the supervision of

Dr. Surendra Kumar

Faculty of Education

Kavita Tomar

School of Education

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipuram, (Sector-F) Phaphamau, Prayagraj- 211021

Scanned with OKEN Scanner

प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति एवं शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन

सारांश

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन उत्पन्न किया है। विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की अवधारणा ने पारंपरिक शिक्षण विधियों को एक नई दिशा प्रदान की है। डिजिटल उपकरणों जैसे स्मार्ट बोर्ड, टैबलेट, शैक्षिक ऐप, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और ई–कंटेंट के माध्यम से शिक्षण को अधिक रोचक, सहभागी एवं प्रभावी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। कोविड–19 महामारी के दौरान यह परिवर्तन और भी तीव्र हो गया, जब ऑनलाइन शिक्षा एक अनिवार्यता बन गई। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि वर्तमान समय में भारत के प्राथमिक विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण की क्या स्थिति है, इसकी प्रभावशीलता क्या है, तथा शिक्षकों को इससे संबंधित क्या–क्या व्यावहारिक समस्याएँ एवं चुनौतियाँ झेलनी पड़ रही हैं।

शोध के अंतर्गत विभिन्न राज्यों के सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं प्रेक्षण के माध्यम से डाटा संकलित किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि डिजिटल शिक्षण को लेकर शिक्षकों में सकारात्मक रूचि है और वे इसे अपनाने के लिए इच्छुक हैं, परंतु व्यवहारिक स्तर पर उन्हें अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। सबसे प्रमुख समस्याओं में तकनीकी संसाधनों की अपर्याप्तता (जैसे प्रोजेक्टर, स्मार्टफोन, लैपटॉप आदि की कमी), स्थायी इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या, डिजिटल उपकरणों की मरम्मत एवं रखरखाव में कठिनाई, तथा डिजिटल साक्षरता का अभाव शामिल है। साथ ही, अधिकतर शिक्षकों को डिजिटल टूल्स एवं शैक्षणिक सॉफ्टवेयर के उपयोग का समुचित प्रशिक्षण नहीं मिला है, जिससे उनके लिए इनका प्रभावी उपयोग करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि डिजिटल शिक्षण की सफलता केवल तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता पर नहीं, बल्कि शिक्षकों के सतत प्रशिक्षण, प्रशासनिक सहयोग, उपयोगकर्ता–मित्र डिजिटल सामग्री की उपलब्धता, और विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए की गई योजना पर निर्भर करती है।

Keywords:

प्राथमिक शिक्षा, डिजिटल शिक्षण, शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	1-3
2	Literature Review	3-10
3	Description Broad Area	10-13
4	Objectives of the Study	13-15
5	Research Methodology	15-16
6	Expected Outcomes of the Research	16-17
7	References	18-19
	Plagiarism Report	

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

1. प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा का सम्बन्ध 6से 14 वर्ष तक के विद्यार्थियों से है। जिस पर बच्चों का अधिकार है परन्तु इस स्तर पर यह बात भी नजर आती है कि शिक्षा का संबंध बच्चों के माता–पिता से, शिक्षकों से, विद्यालय व्यवस्था से और नीति निर्माता से भी है। इसका अर्थ यह है कि बच्चों की शिक्षा का दायित्व हम सभी का साझा दायित्व है और हम सभी के द्वारा इस दायित्व की पूर्ति करना बेहद जरूरी है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम बालक के समझाने की शक्ति व उसके उपयोग करने की योग्यता का आकलन करने पर बल देता है। इस अर्थ में यह अधिकार तथ्यों, सूचनाओं व रटे-रटाये ज्ञान की तुलना में दैनिक उपयोग व व्यावहारिक ज्ञान को महत्वपूर्ण मानता है। यह अधिकार बच्चों की सृजनात्मक क्षमता व उनकी जिज्ञासा तथा खोजपूर्ण प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देता है।

नई शिक्षा प्रणाली शिक्षा के क्षेत्र में जहां शिक्षक के सामने कई चुनौतियां उत्पन्न करती है, वहीं बच्चों को यथोचित अधिगम की संभावनाएं प्रदान करती है। नई शिक्षा प्रणाली में हर बच्चा महत्वपूर्ण है। शिक्षक जब प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करता है तब बच्चे ज्यादा सीखते हैं। शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षण में नवाचार करते हुए बहुविध, सतत एवं समावेशी शिक्षण पर बल दें।

आज के विद्यालय सिर्फ विषय वस्तु पर केंद्रित नहीं हैं,बल्कि उन्हें नई तकनीकी से परिचित कराकर जीवन और समाज के बहुआयामी पक्षों से परिचित कराने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में प्रजातांत्रिक गुणों का तेजी से विकास हो रहा है, ऐसे में विद्यार्थियों के मानस में तार्किक और आलोचनात्मक दृष्टि का विकास, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के संरक्षण में हो रहा है। ऐसे में विद्यार्थियों का तार्किक, बौद्धिक पोषण सामाजिक विज्ञान की व्यापकता में देखा जा सकता है। इसके लिए शिक्षक को सबल और सक्षम रूप से तैयार करना होगा।

आज के संदर्भ में शिक्षा मानव विकास की मूलभूत आवश्यकता है। यह हमारे मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास को सँवारती है। शिक्षा के माध्यम से हम नई विचारधारा और विचारों का विकास करते हैं,संगठनशीलता का विकास करते हैं और नए सुसंगत मानवीय मूल्यों को स्वीकार करने में सहायता प्रदान करते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया के माध्यम से ही मानव शिशु का

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास होकर वह समझ में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है। उसके चरित्र का निर्माण होता है, उसका समाजीकरण होता है और वह मनुष्य संज्ञा पाने के योग्य बनता है।

वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर मानव संसाधन के निर्माण और विकास के लिए शिक्षा के डिजिटलीकरण पर विशेष ध्यान भी दिया जा रहा है और सार्थक चर्चा भी विभिन्न स्तरों पर की जा रही है। ऐसी शिक्षा की संकल्पना भारत में ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर की जा रही है, जिसमें कि प्रौद्योगिकी और डिजिटल उपकरणों को समाहित कर बालकों को ज्ञान प्रदान किया जा सके। कोरोना काल में डिजिटल शिक्षण, शिक्षा के क्षेत्र में वरदान साबित हुई थी। वर्तमान समय मेंभी सभी शिक्षण संस्थान ई–तकनीकी को ग्रहण करने के लिए प्रयासरत है। क्योंकि ऑनलाइन तकनीकी के प्रयोग से कई घंटो के कार्य को कुछ क्षणों में करने में सफलता मिली है। परिषदीय और निजी शिक्षण संस्थानों में शिक्षा का एक बड़ा माध्यम ऑनलाइन शिक्षा को माना जा रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 में भी स्पष्ट संकल्पना है कि स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं के साथ–साथ ऑनलाइन शिक्षक विकास मॉड्यूल के रूप में प्रस्तुत करने की बात कही गई है। इससे विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के समय एवं ऊर्जा की बचत हो सकेगी। भारत में शिक्षा के डिजिटलीकरण की दिशा में अनेकों प्रयास तेजी से किए जा रहे हैं।

डिजिटल शिक्षा विद्यार्थियों को ऐसा वातावरण बनाकर अपनी शिक्षा पर अधिक नियंत्रण रखने की अनुमति देती है, जहाँ छात्र अपनी प्रगति के लिए अधिक जवाबदेह होते हैं, और वे क्या पढ़ते हैं? तथा कैसे पढ़ते हैं? इस पर उनका अधिक नियंत्रण होता है। डिजिटल सामग्रियों में पाठ, डेटाबेस, स्थिर और चलती छवियां, ऑडियो, ग्राफिक्स, साफ्टवेयर और वेबपेजइत्यादि सम्मिलित हैं, जिनमें प्रारूपों की एक विस्तृत और बढ़ती श्रृंखला भी सम्मिलित है। यद्यपि इन सभी के लिए प्रायः अल्पकालिक रख रखाव और प्रबंधन की आवश्यकता होती है।

ऐसी संकल्पना की जाती है कि शिक्षा का डिजिटलीकरण बालकों को बड़े स्तर और मंच प्रदान करने के साथ–साथ अधिगम पद्धति के आधार पर उनकी प्रतिभा और कौशल को भी प्रदर्शित कर सकता है। बालक अपनी सामर्थ्य, शक्ति और समय के अनुसार सीखने के विविध अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

दृष्टि (4 सितंबर 2020) के अंक में भारत में डिजिटल शिक्षा के मार्ग की प्रमुख चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए बताया गया है कि भारत में डिजिटल शिक्षा के मार्ग में अनेकों चुनौतियाँ हैं जैसे– उचित,

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

अध्ययन स्थानों का अभाव, इंटरनेट की अपर्याप्त पहुँच, इंटरनेट की धीमी गति, किसी मानक नीति का न होना, शिक्षक-प्रशिक्षण, पालन–पोषण का विशय इत्यादि।

डिजिटल शिक्षा सभी संवर्गों के लिए आवश्यक व रोचक शिक्षण बन चुकी है और विशेष रूप से बच्चों के सीखने के लिए प्रभावी है, क्योंकि अभिनव, ऑडियो–वीडियो सुविधा बच्चे के मस्तिष्क में संज्ञानात्मक तत्वों को बढ़ावा देती है। परन्तु यहाँ विचारणीय विषय यह है कि शिक्षक के लिए कक्षा आधारित शिक्षण से डिजिटल शिक्षा में परिवर्तन के लिए समय के साथ बहु–आयामी प्रयासों एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

डिजिटल परिवर्तन के मद्दे नजर हो रहे सभी परिवर्तनों के बावजूद शिक्षा का लक्ष्य एक ही है। इसे व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से विकसित करने में सक्षम बनाना चाहिए और उन्हें जिम्मेदार तरीके से सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक जीवन में भाग लेने की अनुमति देनी चाहिए। इसलिए हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो नवीनतम तकनीक के अनुरूप हो, भविष्य के कार्य स्थल में सफल होने के लिए मनुष्य को डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता होगीं। इसीलिए हमारी शैक्षिक प्रणाली और विशेष रूप से हमारे सीखने और सिखानेके तरीके को डिजिटलीकरण के इस युग के लिए अनुकूलित होना चाहिए।

2. संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

कुमार, ललन (2021) जी ने क़ोविड–19 के दौर में प्राथमिक शिक्षा में संभावनाएँ एवं चुनौतियां, विषय पर एक शोध अध्ययन किया। और उसमें पाया कि ऑनलाइन पढ़ाई में विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। वहीं दूसरी ओर डिजिटल शिक्षा 21 वीं सदी में समाज की आवश्यकता बनती जा रही है। ऐसे में नीती निर्धारकों को एक मिश्रित व्यवस्था चलानी चाहिए, जिसमें ऑफ़लाइन कक्षा के माध्यम से नैतिक, सामाजिक व व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा मिले तथा ऑनलाइन कक्षा के माध्यम से तकनीक व विज्ञान को बढ़ाया जा सके। इसके अलावा शोधकर्ता ने यह भी पाया कि भारत जैसे विकासशील देश में अभी डिजिटल शिक्षा एक बहुत बड़ी चुनौती है।भौतिक संसाधनों से लेकर के मानवीय संसाधन तथा कनेक्टिविटी जैसी चुनौतियों से भारत जूझ रहा है। इसलिए इन चुनौतियों पर कार्य करने के पश्चात ही भारत डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में उचित लाभ उठा पायेगा तथा विकासशील देशों में अग्रणी बन पाएगा।

कुमार, दीप एवं सिंह मधु (2021), ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रति भावी शिक्षकों का दृष्टिकोण, जागरूकता और ई–लर्निंग: सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा की। इस अध्ययन का लक्ष्य सूचना

Kavita Tomar

और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए शिक्षक–शिक्षकों के दृष्टिकोण के साथ–साथ उनके ज्ञान, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी उपकरण और उपकरण के उपयोग के स्तर को देखना तथा यह देखना था कि क्या तकनीकी सहायता की कमी है और शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षण और सीखने के दौरान क्या–क्या चिंता है। यह पाया गया कि शिक्षा–शिक्षकों का शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और उसके उपकरणों और उपकरणों के उपयोग के प्रति एक अच्छा दृष्टिकोण है, लेकिन वे शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को एकीकृत नहीं कर रहे हैं, जिसके कारण कई बाधाएं हैं। वर्तमान निष्कर्षों के अनुसार, शिक्षा–शिक्षकों को सरकार और शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रबंधन दोनों से प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता की कमी है। इस अध्ययन के परिणाम यह भी दर्शाते हैं कि शिक्षा–शिक्षक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपकरणों से और उपकरणों को नियोजित करने से सावधान रहते हैं। शिक्षा–शिक्षकों में, तथापि, शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया में आई०सी०टी० उपकरणों और गैजेट्स का उपयोग करने के लिए प्रेरणा और उत्साह की कमी है। यदि शिक्षक–शिक्षा आई०सी०टी०–प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता, आई०सी०टी०संसाधन, प्रेरणा, प्रबंधन सहायता और शिक्षा प्रक्रिया में आईसीटी के लाभों से परिचित हैं, तो वे शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया में आई०सी०टी० को सफलतापूर्वक शामिल करने में सक्षम होंगे। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा में आईसीटी के बारे में शिक्षक–शिक्षकों के दृष्टिकोण के साथ–साथ उनके ज्ञान और शैक्षिक प्रक्रिया के दौरान उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले आई०सी०टी० उपकरणों और गैजेट्स के स्तर को बेहतर ढंग से समझने के लिए उपयोग किया जाना है। वर्तमान अध्ययन का उपयोग शिक्षक–शिक्षकों के भय, तकनीकी सहायता की कमी और शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया में प्रशिक्षण के साथ–साथ समायोजन करने और उन्हें तकनीकी–शिक्षक बनने में सक्षम बनाने के लिए भी किया जाएगा।

कुमार, एल. (2021), कोविड–19 के दौर में प्राथमिक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षाः संभावनाएं एवं चुनौतियांविषय पर शोध किया और यह निष्कर्ष पाया कि वर्तमान समय में लगभग 50 करोड़ ही इंटरनेट यूजर है। आभासी अधिगम उपकरण (वर्चुअल लर्निंग टूल्स) के लिए विशेष रूप से उन्नत एवं सुरक्षात्मक उपायों के साथ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म सुनिश्चित किए जाने चाहिए तथा उपकरणों में नवीनतम सॉफ्टवेयर एवं एंटीवायरस प्रोग्राम समय एवं आवश्यकतानुसार अद्यतन होने चाहिए। डिजिटल उपकरणों व कार्यक्रमों का हैकिंग से रोकथाम हेतु भी विशेष प्रबंध होने चाहिए। समाज के गरीब और

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

वंचित समूहों सहित सभी के लिए ऑनलाइन शिक्षा सस्ती व आसानी से पहुँच में नहीं है। जो छात्र ऑनलाइन शिक्षा को ग्रहण करने में असमर्थ हैं उनके लिए निःशुल्क ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि कोई भी छात्र शिक्षा प्राप्त करने से वंचित न रहे अतः हम कह सकते हैं कि डिजिटल शिक्षा जितनी आनंददायक है उतनी ही उसमें चुनौतियां भी हैं, जैसे– मानवीय मूल्यों के अभाव, तकनीकी के नुकसान, हैकिंग जैसी समस्याएं आदि। भारत में इंटरनेट योजना 2011 से चल रही है किंतु फिर भी आखिरीछोर तक इंटरनेट की सेवा न पहुंच पाने से यह योजना पूर्णतः सकारात्मक धरातल पर अभी भी धीरे–धीरे ही परिणत हो रही है। डिजिटल शिक्षा का उपयोग यदि सावधानीपूर्वक नहीं किया गया तो यह बालक के सर्वांगीण विकास पर प्रतिकूल प्रभाव भी डाल सकती है।

कुमार, अशोक एवं संदीप (2022), प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में अधिगम संवर्धन हेतु सहायक सामग्री का उपयोग' विषय पर एक शोध किया और अपने शोध में पाया कि शिक्षा में विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल तकनीकी को सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग करना बहुत ही चुनौती पूर्ण कार्य है। वस्तुतः अभी भारत में ई–शिक्षा अपने शैशवावस्था में है या वो कौन–कौन सी चुनौतियां हैं जिससे शिक्षक और विद्यार्थी दोनों प्रभावित हैं? क्या स्कूली शिक्षा से जुड़े करीब 25 करोड़ और उच्च शिक्षा से जुड़े करीब आठ करोड़ विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा से जुड़ पा रहे हैं? हालांकि देश के शिक्षा जगत ने समस्या को अवसर में बदलने के लिए भरसक प्रयास किए हैं परंतु वो नाकाफी से नजर आ रहे हैं। भारत में ऑनलाइन शिक्षा केसामने बहुत सारी चुनौतियां खड़ी हैं। ऑनलाइन शिक्षा के लिए गुणवत्ता तंत्र और गुणवत्ता बेंचमार्क स्थापित करना भी महत्वपूर्ण है। कई ई–लर्निंग मंच एक ही विषय पर कई विषयवस्तु प्रदान करते हैं। इसलिए, विभिन्न ई–लर्निंग प्लेटफार्मों में विषयवस्तुओं की गुणवत्ता भिन्न हो सकती है। तकनीक का असमय फेल होना जैसे इंटरनेट की स्पीड, कनेक्टिविटी की समस्या, घर में जो साधन है उन्हीं की सहायता से लेक्चर तैयार करना उसे रिकॉर्ड करना, नोट्स बनाना उनकी डिजिटल कॉपी तैयार करना, स्टडी मटेरियल खोजना एवं विषयवस्तु के अनुरूप उसे छात्र–छात्राओं से संवाद करना आदि अनेकों नई प्रकार की चुनौतियां शिक्षा समुदाय के समक्ष एक महत्वपूर्ण विशय है, जिसमें इंटरनेट कनेक्टिविटी, टेलीकॉम इंफ्रास्ट्रक्चर, ऑनलाइन सिस्टम की क्षमता, लैपटॉप, डेस्कटॉप की उपलब्धता, सॉफ्टवेयर, शैक्षिक उपकरण, ऑनलाइन मूल्यांकन उपकरण आदि शामिल हैं।

Kavita Tomar

गर्ग मोनिका एस० ने ऑनलाइन एजुकेशन पॉलिसी' (2020), में उत्तर प्रदेश राज्य के सभी राज्य विश्वविद्यालयों को आदेश जारी करते हुए कहा की ऑनलाइन शिक्षा आत्म नियंत्रक एवं आत्मप्रेरित है, इसमें विद्यार्थी अपनी इच्छा एवं गति से सीख सकते हैं। किसी अध्याय को पुनः पढ़ सकते हैं और अपनी इच्छानुसार अध्याय के किसी भाग को छोड़ सकते हैं अथवा किसी भाग पर अधिक ध्यान दे सकते हैं। परन्तु आलसी छात्र इसमें पिछड़ सकते हैं। ई–अध्ययन पाठ्य सामग्री तैयार करने, अध्यापन करने तथा मूल्यांकन करने की प्रक्रियाएं इस तरह तैयार की जानी हैं कि वे सभी प्रकार के विद्यार्थीयों की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके। उच्च स्तरीय ई–कंटेन्ट की उपलब्धता इसकी आधारशिला है। माइक्रोसॉफ्ट टीम, गूगल हैंगआउट, स्काइप, जूम आदि की सहायता सेअंतर–विद्यालयीय शिक्षण वास्तविक समय में संभव है, इसके द्वारा छात्र किसी भी शिक्षक की कक्षा में वास्तविक समय में प्रतिभाग कर ज्ञानार्जन कर सकते हैं। इससे न केवल छात्र अपनी पंसद के शिक्षक से पढ़ सकते हैं, वरन् इससे ऑनलाइनशिक्षण समायोजन कर, आंशिक रूप से कालेजों में शिक्षकों की तात्कालिक समस्या का समाधान किया जा सकता है तथा शिक्षक–छात्र अनुपात में भी सुधार किया जा सकता है।

गोस्वामी, सरिता (2021), ने मेरठ शहर में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रति प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों का रवैया: एक तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि– सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रति प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिंग आधार पर दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। दोनों संचार तकनीक के इस्तेमाल से वाकिफ हैं। विज्ञान और कला शिक्षकों केदृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया है। विज्ञान और कला दोनों के शिक्षक अपने–अपने विषयों में सूचना और संचार के उपयोग को आवश्यक मानते हैं। शहरी और ग्रामीण प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों के रवैये में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया है। शहरी और ग्रामीण दोनों स्कूलों के शिक्षकों के लिए शिक्षण कार्य में इसकी उपयोगिता और प्रभाव को माना जाता है।

गुप्ता एवं सुराणा (2019), ने इन्टरनेट पर हिन्दी विषयी वेब संसाधनों की उपलब्धता का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया किहिन्दी विषयी वेबसंसाधनों को हिन्दीं की विभिन्न शाखाओं, मल्टीमीडिया एवं वेब पेजों के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण करने पर पाया गया की इन्टरनेट पर इनके अनुरुप वेबसंसाधन की उपलब्धता पर्याप्त हैं। हिन्दी विषय जो कि कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट संसाधनों की दृष्टि से कमतर आँका जाता है इसमें भी वेब संसाधनों की उपलब्धता है। आवश्यकता केवल यह है कि मल्टीमीड़िया के रूप में दृष्य–श्रृव्य संसाधनों को बढ़ाने का कार्य किया जाये तथा

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

...विशेषज्ञों द्वारा दिये गये विशिष्ट व्याख्यानों को इन्टरनेट पर अपलोड किया जाये। जिसमें हिन्दी ...के व्याकरणिक रूप को भी आसानी से समझा जा सके। साथ ही इस प्रकार के कार्यों के लिये ...को जागरूक किया जाये। सभी विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में भी आई.सी.टी. के प्रयोग पर ...देकर हिन्दी विषयी शिक्षण में कम्प्यूटर का प्रयोग कर इसे आसान बनाया जाये।

...सिया, **प्रतीक एवं सिंह, सोनू** (2022), ने 'डिजिटल शिक्षा– शिक्षा का एक समावेशी दृष्टिकोण' ...शोधपत्र में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल शिक्षा के उपयोग एवं उसकी चुनौतियों का ...अध्ययन किया, जिसमें निष्कर्ष में यह प्राप्त किया कि डिजिटल शिक्षा ने वैश्विक स्तर पर शिक्षा के ...परिदृश्य को बदल कर रख दिया है। आज हम जिस तरह से सीखते हैं, उसमें एक पूर्ण क्रांति ...गई है, जो प्रौद्योगिकी द्वारा लायी गयी। डिजिटल स्क्रीन के द्वारा प्रत्येक बच्चे को शिक्षकों से ...स्थान आधार पर सामग्री और इनपुट प्राप्त करने में सुविधा होती है। साथ ही साथ यह विभिन्न निर्देशात्मक शैलियों को भी जोड़ता है। डिजिटल शिक्षा में विद्यार्थियों के रुझान का प्रमुख कारण यह है कि इसमें प्रत्येक विद्यार्थी को समान रूप से महत्त्व दिया जाता है। साथ ही साथ सीखने को अधिक रोचक, व्यक्तिगत और आनंददायक बनाया गया है। किंतु इसके मार्ग में अनेक चुनौतियां भी हैं, क्योंकि अभी तक भारत जैसे विकासशील देश में डिजिटल ढांचे की अनुपलब्धता, कमजोर कनेक्टिविटी,अध्यापकों में डिजिटल शिक्षणके प्रशिक्षण का अभाव आदिहैं।

...लिन, **टी० गार्ड (2022)**, ने अपने एक एडिटेड बुक जिसका शीर्षक था 'डिजिटल एजुकेशन' में बताया ...की शिक्षा समाज और अर्थव्यवस्था के आगे बढ़ने में मौलिक भूमिका निभाती है। औपचारिक, गैर-औपचारिक और अनौपचारिक साधनों के माध्यम से, नागरिकों को उन मानदंडों, कौशलों और ज्ञान से भर दिया जाता है, जिनकी उन्हें समाज में समृद्धि के लिए आवश्यकता होती है। यह बात डिजिटल सोसायटी पर भी समान रूप से लागू होती है। ऐसे में, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि डिजिटल प्रौद्योगिकियां दुनिया भर में सरकारी शिक्षा और प्रशिक्षण रणनीतियों का केंद्रीय स्तंभ बन गई हैं। जबकि शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकियों की संभावना के बारे में व्यापक उत्साह है जिसमें डिजिटल घाटा और डिजिटल विभाजन दोनों ही सम्मिलित हैं। पहला शिक्षा में डिजिटल निवेश के सकारात्मक प्रभाव पर निर्णायक साक्ष्य की कमी से सम्बन्धित है, जबकि दूसरा साधन संपन्न और वंचित के बीच विभाजन से सम्बन्धित है। दुर्भाग्य से इसमें समाज के सबसे कमज़ोर वर्ग के लोग सम्मिलित हैं, जैसे– सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित, बड़े वयस्क, छोटे बच्चे, विशेष आवश्यकता वाले लोग साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग इत्यादि।

Kavita Tomar

प्रज्ञाता, डिजिटल एजुकेशन मार्गदर्शिका (2021), डिजिटल शिक्षा हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा निदेर्शन (हिन्दी रूपान्तरण राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान उत्तराखण्ड, देहरादून) के अनुसार कोविड–19 महामारी ने स्कूलों को बंद करने सहित सामान्य जीवन के सुरक्षित रहने में व्यवधान पैदा किया है। इसने देश के 240 मिलियन से अधिक बच्चों को प्रभावित किया है जो स्कूलों में नामांकित हैं। दीर्घकालीन समय से स्कूल बंद होने से बच्चों की सीखने की प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है तथा इससे उनके मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर भी भविष्य में प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है। महामारी के इस दौर में अब शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन करने हेतु छात्रों, अभिभावकों ,शिक्षकों तथा शैक्षिक प्रबंधन तत्रं को प्रयास करने होगे। स्कूलों को न केवल अब पढाने और सीखने के तरीके को फिर से तैयार करना होगा, बल्कि घर से स्कूली शिक्षा के लिए एक बेहतर समन्वयन के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की एक उपयुक्त विधि भी पेश करनी होगी। इसलिए उपरोक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अध्यापक शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर डिजिटल प्रशिक्षण पर बल दिया जाना चाहिए।

वाजपेयी, नितिन व मिश्रा लक्ष्मी (2023), ने 'स्कूली शिक्षा में डिजिटल शिक्षण संम्बधी चुनौतियाँ' नामक शीर्षक से एक शोध पत्र लिखा जिसमें उन्होंने बताया कि स्कूलों में ऑनलाइन, लाइव आदि के माध्यम से एक ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म तैयार किया गया, जिसने डिजिटल शिक्षा में अभूतपूर्व प्रदर्शन किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी डिजिटल शिक्षा तथा प्रौद्योगिकी पर अपना ध्यान केंद्रित किया है, लेकिन फिर भी डिजिटल शिक्षा कहीं–कहीं पर एक चुनौती के रूप में भी उभरकर सामने आई है। वर्तमान युग प्रौद्योगिकी व विज्ञान का युग है। डिजिटलीकरण अधिकांश शिक्षा प्रक्रियाओं और प्रणालियों को बदलने में सहायक सिद्ध हुआ है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे परिवर्तनों को देखते हुए शिक्षा की दशा और दिशा दोनों ही के लिए डिजिटल शिक्षा एक विशिष्ट माध्यम के रूप में उभरी है, क्योंकि शिक्षा प्रत्येक देश के आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय विषय का महत्वपूर्ण तत्व है। विशेष रूप से वर्तमान तकनीकी प्रवृत्तियों के अनुसार शिक्षा प्रणालियों की समझ, अनुकूलन और रूपरेखा से संबंधित विशयें पर हाल ही में कोविड–19 महामारी के दौरान उन पर अधिक जोर दिया गया है। जिसने शिक्षा में ई–लर्निंग के उपयोग को गति प्रदान की है।

शिक्षण अधिगम संसाधन, स्व–अधिगम सामग्री-इग्नू (2021), के अनुसार कोई भी शिक्षण–अधिगमगतिविधि जिसमेंनिर्देश देने के लिए तथा अधिगम को सुगम बनाने के लिए डिजिटल उपकरणों का उपयोग किया जाता है, वह डिजिटल शिक्षण–अधिगम कहलाती है। इसलिए डिजिटल

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षण–अधिगम संसाधन ऐसे कोई भी डिजिटल उपकरण हैं जो शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को सीखने में सहायता करते हैं। डिजिटल यंत्र एवं उपकरण जो शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं में उपयोग किये जाते हैं, उनमें शामिल हैं जैसे ई–बुक्स/डिजिटल बुक्स, कम्प्यूटर्स, टेलीविजन, रेडियो, आईपॉड्स, टैबलेट, कैमरा, डिजिटल रिपोजिटरीज़, डिस्कसन फोरम्स, ब्लॉग्स, ई–कन्टेन्ट, ई–लर्निंग, एम–लर्निंग, ई–मेल, चैट, ऑनलाइन लर्निंग, ऑनलाइन टीचिंग, पॉडकास्ट, सिम्युलेशन्स, सेकेन्ड लाइफ, वर्चुअल रियालिटी, सोशल नेटवर्किंग सर्विसेज, वेबिनार, टेलीकांफ्रेंस, ई कॉमर्स, रेडियो इन्टरएक्टिव इन्सट्रक्शन, यू–ट्यूब, विकी तथा व्हॉट्सएप्प आदि। अतः इन सामग्रियों का कक्ष शिक्षण मे प्रभावशाली उपयोग कैसे किया जाए, इसका प्रशिक्षण अध्यापक शिक्षा के अंतर्गत दिया जा सकता है।

शर्मा, वी0 के0, और संगीता देवी (2019), ने 'भारत में प्राथमिक शिक्षा का एक परिदृश्य' नामक विषय पर एक शोध पत्र लिखा जिसमें प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था और गुणवत्ता में सुधार करने के लिए सबसे पहले अध्यापक प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता बताया है। अध्यापक प्रशिक्षण, व्यवस्था और डिजिटल साक्षरता द्वारा अध्यापकों की शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसी के साथ–साथ प्राथमिक विद्यालयों को मॉडल विद्यालयों में बदलकर इसकी गुणवत्ता में और भी सुधार लाया जा सकता है। मूलभूत सुविधाओं का ध्यान रखकर भी शिक्षा में सुधार लाया जा सकता है। अभिभावकों के साथ–साथ समुदाय को भी जागरूक होने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के दैनिक मूल्यांकन में मात्रात्मक एवं गुणात्मक का होना भी आवश्यक है। समय–समय पर विद्यालय का निरीक्षण होना भी जरूरी है तभी प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा।

साहित्य सर्वेक्षण के निष्कर्ष

साहित्य सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल शिक्षण ने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू कर दी है, परंतु इसकी प्रभावशीलता शिक्षकों की भागीदारी, संसाधनों की उपलब्धता और नीतिगत समर्थन पर निर्भर करती है। विगत वर्षों में अनेक शोधों, रिपोर्टों और शैक्षिक दस्तावेजों से यह सामने आया है कि डिजिटल तकनीकें न केवल शिक्षण को अधिक रोचक बनाती हैं, बल्कि बच्चों के अधिगम में भी सकारात्मक वृद्धि करती हैं, विशेषकर जब उनका उपयोग शिक्षकों द्वारा सही तरीके से किया जाता है।

हालांकि, अधिकांश साहित्य इस बात की पुष्टि करता है कि शिक्षकों के समक्ष कई प्रकार की व्यावहारिक समस्याएँ उपस्थित हैं, जैसे कृ डिजिटल उपकरणों की कमी, तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव, विद्यालयों में इंटरनेट की सीमित उपलब्धता, और प्रशासनिक सहयोग की कमी। साथ ही यह

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

भी पाया गया कि कई शिक्षक डिजिटल तकनीक से भयभीत होते हैं या उसमें आत्मविश्वास की कमी महसूस करते हैं, विशेषकर ग्रामीण या दूरवर्ती क्षेत्रों में।

कुछ अध्ययनों में यह भी उल्लेख मिलता है कि केवल तकनीकी संसाधन उपलब्ध करवा देना ही पर्याप्त नहीं है, जब तक कि शिक्षकों को नियमित रूप से प्रशिक्षित नहीं किया जाए और उन्हें डिजिटल शिक्षण के लाभ, उपयोग एवं सीमाओं की समझ न दी जाए। इसके अतिरिक्त डिजिटल शिक्षण सामग्री का स्थानीय संदर्भ में अनुकूलन भी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है, जिसे अब तक अपेक्षित स्तर पर नहीं किया गया है।

इस प्रकार, साहित्य सर्वेक्षण का निष्कर्ष यह है कि–

- डिजिटल शिक्षण को प्राथमिक शिक्षा में प्रभावी बनाने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जिसमें शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधन वितरण, तकनीकी सहायता और नीति–निर्माण के स्तर पर सामंजस्य हो।
- शिक्षकों की समस्याओं को समझे बिना डिजिटल शिक्षण को मजबूती से लागू करना कठिन है।
- शिक्षा प्रणाली को डिजिटल रूप से समृद्ध और शिक्षक–केंद्रित बनाने हेतु व्यावहारिक, स्थानीय और संवेदनशील रणनीतियों की आवश्यकता है।
- यह निष्कर्ष आगे के शोध और नीतिगत हस्तक्षेप के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है, जिससे डिजिटल शिक्षण को प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर सशक्त रूप से लागू किया जा सके।

3. अध्ययन के विस्तृत क्षेत्र का वर्णन

अप्रत्याशित वैश्विक महामारी के समय से ही शिक्षा की प्रक्रिया प्रभावित हुई है जो विद्यार्थियों की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहा है, जिससे डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता और भी बढ़ गई है। अतः डिजिटल शिक्षा पर कार्य किया जाना आवश्यक है जिससे विद्यार्थियों को मुख्य धारा से जोड़ा जा सके, जिससे यह आवश्यक हो गया है कि उपलब्ध संसाधनों और मांग के आधार पर तेज गति से गुणवत्तापूर्ण डिजिटल शिक्षण पर काम किया जाय, जिससे कोई भी छात्र पीछे न रहे और शिक्षा अन्तराल को भरा जा सके।

डिजिटल शिक्षण अप्रत्याशित समय से सीखने का सबक बनता जा रहा हैं। वर्तमान समय में शिक्षित व्यक्ति की संकल्पना में उसको डिजिटल ज्ञान होना भी सन्निहित होता है। भारत के सभी राज्यों व क्षेत्रों के लिए डिजिटल अधिगम अनुष्ठान के पुर्ननिर्माण और संवर्धन के लिए शिक्षकों और

Kavita Tomar

प्रशिक्षकों के समय और संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग के लिए अनुकूल वातावरण भी तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है।

डिजिटल शिक्षा व्यक्ति को भविष्य में निर्धारित तरीके से सामाजिक जीवन में भाग लेना जारी रखने की अनुमति देता है।डिजिटल शिक्षा को वास्तविकता बनाने के लिए शिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रशिक्षण को भी आधुनिक बनाया जाना चाहिए। डिजिटल शिक्षा के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है जो विद्यार्थियोंके प्रशिक्षण और छात्रों तक प्रासंगिक जानकारी पहुंचाने के लिए डिजिंटल मीडिया का उपयोग करने में सक्षम हो।

जी–20, 2023 से यह स्पष्ट संदेश जाता है कि हमें अपने विद्यार्थियों को डिजिटल ज्ञान से युक्त करना होगा, तभी व्यक्ति व राष्ट्र वैश्विक पटल पर वांछित एवं इच्छित दिशा में अग्रसर हो सकेगा। इस भावी आवश्यकता को देखते हुए वर्तमान में डिजिटल शिक्षा की नींव प्राथमिक स्तर पर रखी जानी आवश्यक है। इस परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है कि हमारे प्राथमिक स्कूलों में कार्यरत शिक्षक डिजिटल शिक्षण की कितनी योग्यता धारित करते हैं? और डिजिटल शिक्षण के प्रति उनके क्या प्रयास हैं?

शिक्षकों के प्रयास में सफलता तभी आ सकती है, जब ये पता लगाया जाए कि वर्तमान स्थिति में विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण की संभावनाएं कितनी और कैसी हैं? तथा वह कौन सी चुनौतियाँ है? जो डिजिटल शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर रही हैं? उपरोक्त संदर्भ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार की नियमावली के अध्याय पाँच में उल्लिखित है।

प्रस्तावित शोध कार्य की आवश्यकता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत में प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षा भलीभांति आकार नहीं ले पा रही है। मो० मोहम्मद सुलेमान (2020) ने 'डिजिटल एजुकेशनः ऑपार्चूनिटी थ्रेट्स एण्ड चैलेंजेज' विषय पर अध्ययन किया और पाया की कुछ ऐसे कारक अवश्य हैं जो डिजिटल शिक्षा की प्रगति को सीमित या अवरूद्ध कर देते हैं। उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में संभावनाएं अधिक तो हैं परन्तु चुनौतियां भी बहुत हैं। जिनमें कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं के संदर्भ में तथ्य और आंकडे एकत्र कर विश्लेषण तथा निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत करना अनुसंधानकर्त्ता का उद्देश्य है।

प्रस्तावित शोध का औचित्य

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल तकनीक का महत्व तेजी से बढ़ रहा है। विशेषकर प्राथमिक शिक्षा, जो किसी भी बालक की शैक्षिक नींव रखती है, उसमें डिजिटल शिक्षण की भूमिका

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी डिजिटल शिक्षण को बढ़ावा देने की स्पष्ट रूपरेखा दी गई है। ऐसे समय में यह आवश्यक हो गया है कि यह अध्ययन किया जाए कि डिजिटल शिक्षण प्राथमिक स्तर पर वास्तव में किस रूप में अपनाया जा रहा है, इसकी क्या वर्तमान स्थिति है, और शिक्षकों को इससे जुड़ी क्या प्रमुख समस्याएँ झेलनी पड़ रही हैं।

यह शोध इसलिए आवश्यक एवं औचित्यपूर्ण है, क्योंकि

1. **शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता–** डिजिटल उपकरणों का उपयोग शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सकता है, किंतु क्या ये उपकरण प्राथमिक कक्षाओं में प्रभावी रूप से उपयोग हो रहे हैं, यह समझना आवश्यक है।
2. **शिक्षकों की व्यावहारिक समस्याओं की अनदेखी–** वर्तमान नीतियाँ डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने पर केंद्रित हैं, लेकिन शिक्षक, जो इस प्रणाली के मुख्य स्तंभ हैं, वे किन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, इस पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है।
3. **ग्रामीण और शहरी विभाजन की वास्तविकता–** देश के अनेक हिस्सों में प्राथमिक विद्यालय संसाधनों की दृष्टि से अत्यंत पिछड़े हुए हैं। यह शोध इस असमानता को उजागर करने तथा समाधान की दिशा में सुझाव देने में सहायक हो सकता है।
4. **नीतिगत हस्तक्षेप के लिए आधार–** यह अध्ययन डिजिटल शिक्षण को सुचारु रूप से लागू करने के लिए आवश्यक संसाधनों, प्रशिक्षण की आवश्यकता, तथा नीतिगत समर्थन की सिफारिशें प्रस्तुत कर सकेगा।
5. **भविष्य की शिक्षा प्रणाली के लिए मार्गदर्शन–** कोरोना महामारी के बाद शिक्षा का परिदृश्य तेजी से बदला है। यह शोध भविष्य की शिक्षा प्रणाली के डिजिटलीकरण को यथार्थ रूप में समझने और उसका आधारभूत मूल्यांकन करने में सहायक होगा।
6. **शिक्षक केंद्रित शोध का अभाव–** अधिकांश शोध विद्यार्थियों या तकनीकी पक्षों पर केंद्रित हैं, जबकि शिक्षकों की भूमिका, उनकी समस्याएँ, प्रशिक्षण की आवश्यकता आदि पर गहराई से कम कार्य हुआ है। यह शोध इस रिक्तता को भरने का प्रयास करेगा।

इस प्रकार, यह शोध न केवल वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है, बल्कि यह डिजिटल शिक्षण को प्राथमिक शिक्षा में व्यावहारिक रूप से लागू करने के लिए एक मूल्यवान मार्गदर्शन एवं समाधान प्रस्तुत करेगा, जिससे शिक्षा अधिक समावेशी, गुणात्मक और प्रभावी बन सके।

Scanned with OKEN Scanner

शोध प्रश्न

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में शिक्षा की गुणवत्ता एवं विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया तथा विद्यालयी गतिविधियों की विवशता के दृष्टिगत यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि विषम परिस्थितियों में विद्यार्थियों को शिक्षण की मुख्य धारा में कैसे बनाए रखा जाए? उनको विद्यालय से कैसे जोड़कर रखा जाए? इन सब प्रश्नों का उत्तर हमें डिजिटलीकरण के रूप में दिखाई देता है। अतः अनुसंधानकर्त्ती के मन में निम्नलिखित प्रश्न आये कि –

क्या डिजिटलीकरण प्राथमिक शिक्षण हेतु उपयुक्त माध्यम हो सकता है?, क्या पर्याप्त संसाधन हमारे पास उपलब्ध हैं?, क्या पर्याप्त प्रशिक्षण की व्यवस्था है?, क्या शिक्षकों द्वारा इसका पर्याप्त उपयोग किया जा रहा है? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर उपर्युक्त शोध कार्य द्वारा खोजने का प्रयास किया जाएगा।

शोध समस्या

उक्त शोध प्रश्नों के समाधान प्राप्ति की दृष्टि से प्रस्तावित शोध का कथन निम्नानुसार है –

"प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति एवं शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन।"

4. अध्ययन के उद्देश्य

शोधकर्त्री द्वारा इस अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

1. प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति में विद्यालयों के प्रकार के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति में विद्यालयों की स्थानीय पृष्ठ भूमि के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।
5. प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति में शिक्षकों के लिंग के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।
6. प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति में शिक्षण के माध्यम के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।

. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की समस्याओं में विद्यालयों के प्रकार के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

8. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की समस्याओं में विद्यालयों की स्थानीय पृष्ठ भूमि के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।

9. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की समस्याओं में लिंग के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।

10. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की समस्याओं में शिक्षण के माध्यम के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

शोधकर्त्री ने उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु वर्तमान अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है–

1. प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति में विद्यालयों के प्रकार के आधार पर अंतर है।
2. प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति में विद्यालयों की स्थानीय पृष्ठ भूमि के आधार पर अंतर है।
3. प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति में शिक्षकों के लिंग के आधार पर अंतर अंतर है।
4. प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति में शिक्षण के माध्यम के आधार पर अंतर अंतर है।
5. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की समस्याओं में विद्यालयों के प्रकार के आधार पर अंतर है।
6. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की समस्याओं में विद्यालयों की स्थानीय पृष्ठ भूमि के आधार पर अंतर है।
7. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की समस्याओं में लिंग के आधार पर अंतर है।
8. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की समस्याओं में शिक्षण के माध्यम के आधार पर अंतर है।

प्रस्तावित अध्ययन की परिसीमाएं

प्रस्तावित शोधकार्य उत्तर प्रदेशराज्य के प्रयागराज जनपद में संचालित ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों तक सीमित रहेगा।

प्रस्तावित शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का पारिभाषीकरण

प्राथमिक शिक्षा

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा एक से पाँच तक के परिषदीय एवं निजी

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षण संस्थानों से है।

डिजिटल शिक्षण

डिजिटल शिक्षण एक तकनीक या सीखने-सीखाने की विधि है जिसमें प्रौद्योगिकी और डिजिटल उपकरण शामिल हैं। यह एक नया और व्यापक तकनीकी क्षेत्र है जो किसी भी छात्र को ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करेगा। डिजिटल शिक्षण विद्यार्थियों को ऐसा वातावरण बनाकर अपनी शिक्षा पर अधिक नियंत्रण रखने की अनुमति देता है, जहाँ छात्र अपनी प्रगति के लिए अधिक जवाबदेह होते हैं, और वे क्या पढ़ते हैं? तथा कैसे पढ़ते हैं? इस पर उनका अधिक नियंत्रण होता है।

5. शोध विधि

इसके अन्तर्गत अध्ययन विधि, जनसंख्या, प्रतिदर्श, प्रतिदर्शन, शोध उपकरण एवं सांख्यिकीय विधि का वर्णन इस प्रकार है–

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि से किया जाएगा।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध कार्य को सम्पादित करने के लिए शोधकर्ती द्वारा उत्तर प्रदेश केप्रयागराज जनपद के समस्त प्राथमिक परिषदीय व निजी प्राथमिकशिक्षण संस्थान एवं उसमें कार्यरत शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया जाएगा।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन

प्रस्तुत शोध में प्रतिदर्श हेतुस्तरीकृतयादृच्छिक प्रतिदर्शन का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तुत शोध परिषदीय व निजी शिक्षण संस्थानों को न्यादर्श के रूप में शोधकर्त्रीद्वारा उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जनपदकेकुछ विकास खण्डोंमें चलने वाले प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को न्यायदर्श के रूप में चयन करेगी। चयनित प्रतिदर्श सारणी के अनुसार निम्नलिखित है–

		परिषदीय शिक्षण संस्थान		निजी शिक्षण संस्थान	
		महिला	पुरुष	महिला	पुरुष
नगरीय प्राथमिक शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक	हिन्दी माध्यम	50	50	50	50
	अंग्रेजी माध्यम	50	50	50	50
ग्रामीण प्राथमिक शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक	हिन्दी माध्यम	50	50	50	50
	अंग्रेजी माध्यम	50	50	50	50
योग		200	200	200	200

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

प्रस्तावित शोध उपकरण

शोधकर्त्री द्वारा निम्न स्वनिर्मित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा–

1. डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति सम्बन्धी प्रश्नावली
2. शिक्षकों की समस्या सम्बन्धी प्रश्नावली

प्रयुक्त सांख्यिकी–विधियां

शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए टी० परीक्षण (t-Test) का प्रयोग किया जाएगा। आवश्यकतानुसार प्रतिशत विश्लेषण किया जाएगा।

6. शोध के सम्भावित परिणाम

प्रस्तावित शोध अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख परिणामों की अपेक्षा की जा रही है:

1. डिजिटल शिक्षण की वर्तमान स्थिति का स्पष्ट चित्रण

शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होगा कि प्राथमिक विद्यालयों (विशेषकर ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में) में डिजिटल शिक्षण किस स्तर तक क्रियान्वित हो रहा है, किन तकनीकी उपकरणों और संसाधनों का उपयोग हो रहा है, तथा शिक्षण पद्धति में इसका वास्तविक प्रभाव क्या है।

2. शिक्षकों की समस्याओं की पहचान

अध्ययन यह उजागर करेगा कि शिक्षक डिजिटल शिक्षण को अपनाने में किन व्यावहारिक, तकनीकी, मानसिक और प्रशासनिक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। यह शिक्षकों की जमीनी चुनौतियों को समझने में सहायक होगा।

3. शिक्षकों की डिजिटल दक्षता का मूल्यांकन

यह शोध शिक्षकों की डिजिटल साक्षरता, उनके प्रशिक्षण की स्थिति, एवं तकनीकी उपकरणों के प्रति उनके दृष्टिकोण का आकलन करेगा, जिससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि वे डिजिटल शिक्षण के लिए कितने तैयार हैं।

4. शिक्षा में असमानता के आयामों की पहचान

शोध ग्रामीण बनाम शहरी विद्यालयों, संसाधन–संपन्न बनाम संसाधन–विहीन विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण की उपलब्धता और प्रभाव की तुलना करेगा, जिससे शैक्षिक असमानता को कम करने हेतु ठोस सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें।

5. नीतिगत सुझावों का प्रतिपादन

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा विभाग, विद्यालय प्रशासन, एवं नीति निर्माताओं के लिए व्यावहारिक और क्रियान्वयन योग्य सुझाव दिए जा सकेंगे, जैसे:

- डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपरेखा
- आवश्यक संसाधनों की आपूर्ति
- तकनीकी सहायता प्रणाली का निर्माण
- शिक्षा सामग्री का स्थानीयकरण

6. शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु मार्गदर्शन

शोध यह मार्गदर्शन देगा कि डिजिटल शिक्षण का प्रभावी उपयोग किस प्रकार से प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि कर सकता है, और इसे शिक्षक–केंद्रित दृष्टिकोण से कैसे सशक्त किया जा सकता है।

7. भविष्य के शोध के लिए आधार निर्माण

यह अध्ययन भविष्य में डिजिटल शिक्षा से संबंधित अनुसंधान के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करेगा, विशेषकर शिक्षक शिक्षा, डिजिटल नीति निर्माण और तकनीकी नवाचारों के संदर्भ में।

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.कुमार, अशोक एवं संदीप (2022), प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में अधिगम संवर्धन हेतु सहायकसामग्री का उपयोग, प्राथमिक शिक्षक (शैक्षिक संवाद की पत्रिका), नई दिल्ली, एनसीईआरटी, पेज संख्या–45-57

2.कुमार, एल (2021),कोविड–19 के दौर में प्राथमिक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षाः संभावनाएं एवं चुनौतियां, *RESEARCHREVIEW* (*International Journal of Multi disciplinary*), 6(11), 73–76.

3.कुमार, दीप एण्ड सिंह, मधु (2021). प्रोस्पेक्टिव टीचर्स एटीट्यूड टूवर्ड इन्फार्मेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी अवरनेस एण्ड ई–लर्निंगः ए रिव्यू ऑफ रिलेटेड लिट्रेचर, *इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी*, वॉल्यूम 8, इश्यू–9, पृ0 1045–1049

4. गोस्वामी, सरिता (2021). सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स एटीट्यूड टूवर्ड्स इन्फार्मेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी इन मेरठ सिटीः *ए कम्प्रेटिव स्टडी, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च*,रंगपुर, आगरा, वॉल्यूम 7(1). पृ0 385–388

5.चौरसिया, प्रतीक एवं सिंह, सोनू (2022), 'डिजिटल शिक्षा– शिक्षा का एक समावेशी दृष्टिकोण' प्राथमिक शिक्षक (शैक्षिक संवाद की पत्रिका) एनसीईआरटी नई दिल्ली, पेज संख्या–68-78

6.डिजिटल एजुकेशन मार्गदर्शिका, (2022), *प्रज्ञता*, डिजिटल शिक्षा हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के दिशा निर्देश।

7.डिजिटल एजुकेशन (2022), *'रिसर्च गेट'*,रॉयल सोसाइटी, लंदन, यू.के., चैप्टर नं० 7, वॉल्यूम 3 पृष्ठ संख्या–133।

8. डिजिटल शिक्षण अधिगम संसाधान, (2021), *शिक्षण अधिगम संसाधन*, नई दिल्लीः इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।

9.नरेश, बी० और राजलक्ष्मी (2017), भारत में ई–लर्निंगः एक विश्लेषण, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग, टेक्नोलॉजी, मैनेजमेंट एंड एप्लाइड साइंस*,सुंदरगढ़ ओडिसा, वॉल्यूम 2, इश्यू 5(10), 2349–4476

10. भारत में डिजिटल शिक्षा के मार्ग की प्रमुख चुनौतियां, (2021), नई दिल्लीः दृष्टि आई०ए०एस०।

11. मैडलेला, बी० (2015), शिक्षण को लागू करने में आईसीटी के अवसर और खतरे, अभ्यास,

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

कार्यक्रम, *यूनिवर्सल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च,मॉसिन सिटी,* सदर्न लेयटे, फ़िलिपींस वॉल्यूम 3(6), 351–384 ।

12.वाजपेयी, नितिन व मिश्रा लक्ष्मी (2023), 'स्कूली शिक्षा में डिजिटल शिक्षण संम्बधी चुनौतियाँ' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नॉवेल रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट, अहमदाबाद, वॉल्यूम संख्या8 इश्यू 1पृष्ठ संख्या 403–407

13.सरकार, तन्मय (2021), अवेयरनेसएण्ड एप्लीकेशन ऑफ इन्फार्मेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी इन एजुकेशन एमंग द हायर सेकेण्डरी स्टूडेन्ट, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइनटिफ़िक एंड टेक्नॉलजी रिसर्च,* मुंबई, वॉल्यूम 6, इश्यू–1, पृ0 85–90

14 . शर्मा, विवेक एवं गोदारा, राजेन्द्र (2020). शिक्षक शिक्षा में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अध्ययन, *इण्टनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च,* वॉल्यूम 6(7). पृ0 70–72

15. हबीबुर्रहीम,एच०(2015), इंटरनेट और आईसीटी: अवसर या खतरे शिक्षा जगत? *एंग्लिसिया: जर्नल ऑफ लैंग्वेज, एजुकेशन एंड ह्यूमैनिटीज़,* इंडोनेशिया, वॉल्यूम 3 इश्यू (1), 1–8,

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Kavita Jai Singh
Title	Prathmik siksha me Digital Sikshan
Paper/Submission ID	3678081
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-27 13:14:35
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Kavita Tomar

Scanned with OKEN Scanner